विषयसूची

७. वेदनाभावविधान

- वेदनाभावविधानमें तीन अनुयोगद्वारोंकी सूचना
- भावका चार निक्षेपोंमें अवतार और उनका खुलासा
- यहाँ भाववेदनासे भावकर्म विवक्षित है
- वेदनाभावविधानके कथनका प्रयोजन
- तीन अनुयोगोंके नाम
- पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व
- पदका स्पष्टीकरण
- भावकी अपेक्षा पदमीमांसा
- ज्ञानावरणीय वेदनाकी भावकी अपेक्षा पदमीमांसा
- शेष सात कर्मोंकी भावकी अपेक्षा पदमीमांसा
- भावकी अपेक्षा स्वामित्व
- स्वामित्वके दो भेद व उनका समर्थन
- उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय वेदनाका स्वामी
- अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीय वेदनाका स्वामी
- इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायके जाननेकी सूचना
- उत्कृष्ट वेदनीय वेदनाका स्वामी
- अनुत्कृष्ट वेदनीय वेदनाका स्वामी
- इसी प्रकार नाम और गोत्रके जाननेकी सूचना
- उत्कृष्ट आयुवेदनाका स्वामी
- अनुत्कृष्ट आयुवेदनाका स्वामी

- जघन्य ज्ञानावरणीयवेदनाका स्वामी
- अजघन्य ज्ञानावरणीयवेदनाका स्वामी
- इसीप्रकार दर्शनावरण और अन्तरायके जाननेकी सूचना
- जघन्य वेदनीयवेदनाका स्वामी
- अजघन्य वेदनीयवेदनाका स्वामी
- जघन्य मोहनीयवेदनाका स्वामी
- अजघन्य मोहनीयवेदनाका स्वामी
- जघन्य आयुवेदनाका स्वामी
- अजघन्य आयुवेदनाका स्वामी
- जघन्य नामवेदनाका स्वामी
- अजघन्य नामवेदनाका स्वामी
- जघन्य गोत्रवेदनाका स्वामी
- अजघन्य गोत्रवेदनाका स्वामी
- अल्पबहुत्वके तीन भेद
- जघन्य पद
- जघन्य मोहनीयवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य अन्तरायवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य ज्ञानावरण और दर्शनावरण वेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य आयुवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य गोत्रवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य नामवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य वेदनीयवेदनाका अल्पबहुत्व और उत्कृष्ट पद

- उत्कृष्ट आयुवेदनाका अल्पबहुत्व
- दो आवरण और अन्तरायवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट मोहनीयवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट नाम और गोत्र वेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट वेदनीयवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य और उत्कृष्ट दोनोंका एकसाथ अल्पबहुत्व
- जघन्य मोहनीयवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य अन्तरायवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य दो आवरणवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य आयुवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य नामवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य गोत्रवेदनाका अल्पबहुत्व
- जघन्य वेदनीयवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट आयुवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट दो आवरण और अन्तरायवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट मोहनीय वेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट नाम और गौत्रवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्कृष्ट वेदनीयवेदनाका अल्पबहुत्व
- उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा अल्पबहुत्व
- सातावेदनीय आदि प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व
- आठ कषाय आदि प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व
- अयशःकीर्ति आदि प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व

- चौंसठ पदवाला उत्कृष्ट महादण्डक
- उत्तर प्रकृतियोंका स्वस्थान और उत्कृष्ट अल्पबहुत्व
- तीन गाथाओं द्वारा संज्वलन चतुष्क आदि प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व
- चौंसठ पदवाला जघन्य महादण्डक
- उत्तर प्रकृतियोंका स्वस्थान जघन्य अल्पबहुत्व

प्रथम चूलिका

- दो सूत्रगाथाओं द्वारा गुणश्रेणि निर्जराके ग्यारह स्थान और काल
- अलग अलग सूत्रों द्वारा गुणश्रेणि निर्जराका विचार
- अलग अलग सूत्रों द्वारा गुणश्रेणि निर्जराके कालका विचार

द्वितीय चूलिका

- अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानमें १२ अनुयोगद्वारोंकी सूचना
- बारह अनुयोगद्वारोंके नाम व उनकी सार्थकता
- एक एक स्थानमें कितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं
- अनुभागका विशेष खुलासा
- अविभागप्रतिच्छेदका स्पष्टीकरण
- द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा जघन्य स्थानमें अविभागप्रतिच्छेदोंका विचार
- वर्गका सन्दृष्टिपूर्वक विचार
- वर्गणाविचार
- स्पर्धकविचार
- अविभागप्रतिच्छेदकी त्रिविध प्ररूपणाकी प्रतिज्ञा
- वर्गणाप्ररूपणाके तीन प्रकार व उनका विवेचन
- स्पर्धक प्ररूपणाके तीन प्रकार व उनका विवेचन

- अन्तरप्ररूपणाके तीन प्रकार व उनका विवेचन
- परमाणुओंमें अविभागप्रतिच्छेदोंका आरोप कर जघन्य स्थानमें प्रदेशप्ररूपणा
- प्रदेशप्ररूपणामें छह अनुयोगद्वारोंके नाम व सन्दृष्टिपूर्वक उनका विवेचन करनेकी प्रतिज्ञा
- प्ररूपणा
- प्रमाण
- श्रेणिप्ररूपणाके दो भेद व उनका विचार
- अवहारविचार
- भागाभागका अवहारके समान जाननेकी सूचना
- अल्पबहुत्वविचार
- स्थानप्ररूपणा
- स्थानपदकी व्याख्या
- स्थानके दो भेद व उनका लक्षणपूर्वक विशेष विचार
- अन्तरप्ररूपणा
- अन्तरप्ररूपणाकी सार्थकता
- स्थानान्तरका स्वरूप
- अनुभागबन्धस्थानान्तर योगस्थानान्तरोंके समान नहीं हैं इसका विचार
- जघन्य स्थानसे द्वितीय स्थानके प्रमाणका विचार व उनमें स्पर्धक प्ररूपणा
- आगे भी तृतीयादि स्थानोंके प्रमाणका विचार
- जघन्यादि स्थानोंमें षट्स्थान प्ररूपणा व स्थानोंका अल्पबहुत्व
- काण्डकप्ररूपणा
- काण्डकप्ररूपणाके प्रसंगसे अनुभागबन्ध और अनुभागसत्कर्मका अल्पबहुत्व

- काण्डकशलाकाओंका प्रमाण
- अनन्तभागवृद्धि आदिका प्रमाण
- अनन्तभागवृद्धि आदिका अल्पबहुत्व
- ओजयुग्मप्ररूपणा
- षट्स्थानप्ररूपणा
- अनन्तभागवृद्धिविचार
- असंख्यातभागवृद्धिविचार
- संख्यातभागवृद्धिविचार
- संख्यातगुणवृद्धिविचार
- असंख्यातगुणवृद्धिविचार
- अनन्तगुणवृद्धिविचार
- जघन्यादि स्थानोंमें अनन्तभागवृद्धि आदिका विचार
- जघन्य स्थानमें अनन्तभागवृद्धि आदिकी प्रमाणप्ररूपणा
- प्रथम अष्टांकसे लेकर ऊर्वंकतक प्राप्त होनेवाली अनन्तगुणवृद्धिके विषयमें तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा
- अधस्तनस्थानप्ररूपणा
- समयप्ररूपणा
- चार समयवाले आदि अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण
- चार समयवाले आदि सब अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंका अल्पबहुत्व
- प्रसंगसे अग्निकायिक, कायस्थिति व अनुभागस्थानोंका अल्पबहुत्व
- वृद्धिप्ररूपणा
- छह वृद्धि और छह हानियोंके अवस्थानकी प्रतिज्ञा

- पाँच वृद्धि और पाँच हानियोंका काल
- अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका काल
- कालविषयक अल्पबहुत्व
- यवमध्यप्ररूपणा
- पर्यवसानप्ररूपणा
- अल्पबहुत्वप्ररूपणा
- अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अल्पबहुत्व विचार
- परम्परोपनिधाकी अपेक्षा अल्पबहुत्व विचार
- अनुभागसत्कर्मस्थानविचार
- अनुभागबन्धस्थानसे अनुभागसत्कर्ममें क्या अन्तर है इसका विचार
- घातस्थानोंकी प्ररूपणा
- दो प्रकारके घातपरिणामोंका विचार
- सत्त्वस्थान कहाँ होते हैं इसका विचार
- प्रथमादि परिपाटी क्रमसे हतसमुत्पत्तिस्थानोंका विचार
- हतहतसमुत्पत्तिस्थानविचार
- स्थितिस्थानोंमें अपुनरुक्त स्थानोंका विचार
- बन्धसमुत्पत्ति आदि स्थानोंका अल्पबहुत्व

तीसरी चूलिका

- जीवसमुदाहारमें आठ अनुयोगद्वार
- जीवसमुदाहार और आठ अनुयोगद्वारोंकी सार्थकता
- एकस्थान जीवप्रमाणानुगमविचार
- निरन्तरस्थान जीवप्रमाणानुगमविचार

- सान्तरस्थान जीवप्रमाणानुगमविचार
- नानाजीवकालप्रमाणानुगम
- वृद्धिप्ररूपणा और उसके दो अनुयोगद्वार
- अनन्तरोपनिधाविचार
- परम्परोपनिधाविचार
- यवमध्यप्ररूपणा
- स्पर्शनविचार
- अल्पबहुत्वविचार

८. वेदनाप्रत्ययविधान

- वेदनाप्रत्ययविधान कहनेकी प्रतिज्ञा व उसकी सार्थकता
- नैगम, संग्रह और व्यवहारनयसे ज्ञानावरणके प्राणातिपातव्यत्ययका विचार
- मृषावादप्रत्ययका विचार
- अदत्तादानप्रत्ययका विचार
- मैथुनप्रत्ययका विचार
- परिग्रहप्रत्ययका विचार
- रात्रिभोजनप्रत्ययका विचार
- क्रोध, मान आदि प्रत्ययोंका विचार
- निदानप्रत्ययका विचार
- अभ्याख्यान, कलह आदि प्रत्ययोंका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके प्रत्ययोंको जाननेकी सूचना
- ऋजुसूत्रनयसे ज्ञानावरणीयके प्रत्यय
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके प्रत्ययोंको जाननेकी सूचना

- शब्दनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणके प्रत्ययोंका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके प्रत्ययोंको जाननेकी सूचना

९. वेदनास्वामित्वविधान

- वेदनास्वामित्वविधानकी प्रतिज्ञा व उसकी सार्थकता
- नैगम और संग्रहनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणका स्वामी
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंका स्वामी
- संग्रहनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणका स्वामी
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंका स्वामी
- शब्द और ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणका स्वामी
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंका स्वामी

१०. वेदनावेदनाविधान

- वेदनावेदनविधानकी प्रतिज्ञा और सार्थकता
- नैगमनयकी अपेक्षा सभी कर्मप्रकृति हैं ऐसी प्रतिज्ञा
- ज्ञानावरण कर्म बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त एक और नाना प्रत्येक व संयोगी भंगरूप कैसे हैं इसका अलग अलग विचार
- इसी प्रकार सात कर्मोंको जाननेकी सूचना
- व्यवहारनयकी अपेक्षा ज्ञानावरण कर्मके भंगोंका अलग अलग विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना
- संग्रहनयकी अपेक्षा ज्ञानावरण कर्मके भंगोंका अलग अलग विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना
- ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय वेदना एकमात्र उदीर्ण है इसका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना

- शब्दनयकी अपेक्षा अवक्तव्य है इसका विचार

११. वेदनागतिविधान

- वेदनागतिविधानकी प्रतिज्ञा व सार्थकता
- नैगम, संग्रह और व्यवहारनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयवेदना अवस्थित और स्थितावस्थितरूप है इसका विचार
- इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तरायके जाननेकी सूचना
- वेदनीयवेदना स्थित, अस्थित और स्थितास्थित है इसकी सिद्धि
- इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्रके जाननेकी सूचना
- ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणवेदना स्थित और अस्थित है इसका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना
- शब्दनयकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी वेदना अवक्तव्य है इसका विचार

१२. वेदनाअनन्तरविधान

- वेदनाअनन्तरविधानके कहनेकी प्रतिज्ञा और सार्थकता
- नैगम और व्यवहारनयकी अपेक्षा ज्ञानावरण वेदना अनन्तरबन्ध, परम्पराबन्ध और तदुभयबन्धरूप है इसका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना
- संग्रहनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणवेदना अनन्तरबन्ध और परम्पराबन्धरूप है इसका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना
- ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा ज्ञानावरणवेदन परम्पराबन्धरूप है इसका विचार
- इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जाननेकी सूचना
- शब्दनयकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी वेदना अवक्तव्य है इसका विचार

१३. वेदनासन्निकर्षविधान

- वेदनासन्निकर्षके दो भेद व उनकी सार्थकता

- स्वस्थानसन्निकर्षके दो भेद
- जघन्य स्वस्थानसन्निकर्षके स्थगित करनेका कारण
- उत्कृष्ट स्वस्थानसन्निकर्षके चार भेद
- जिसके ज्ञानावरणवेदना द्रव्यसे उत्कृष्ट होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसे होती है उसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रसे उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसे होती है इसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्यादिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्यादिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तरायके जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके वेदनीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके वेदनीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके वेदनीयवेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार नाम और गोत्र कर्मके जाननेकी सूचना
- जिसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार

- जिसके आयुवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जघन्य स्वस्थानवेदनानिष्कर्ष चार प्रकारका है
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायके जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके वेदनीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्यआदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके वेदनीयवेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके वेदनीयवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्यआदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार

- जिसके आयुवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्यआदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके नामवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके नामवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके नामवेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके नामवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके गोत्रवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके क्षेत्र आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके गोत्रवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके गोत्रवेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके गोत्रवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके द्रव्य आदिकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- परस्थानवेदनासन्निकर्षके दो भेद
- जघन्य परस्थानवेदनासन्निकर्षको स्थगित करनेकी सूचना

- उत्कृष्ट परस्थानसन्निकर्षके चार भेद
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके छह कर्मोंकी द्रव्यवेदना कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- ज्ञानावरणीयके समान आयुके सिवा शेष छह कर्मोंके जाननेकी सूचना
- जिसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके सात कर्मोंकी वेदना कैसी होती है इसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीय वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्मकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र कर्मकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा कैसी होती है उसका विचार
- इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तरायकी अपेक्षा जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तरायकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयु, नाम और गोत्रकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्रकी अपेक्षा सन्निकर्षका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके आयुके सिवा छह कर्मोंकी वेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार आयुके सिवा छह कर्मोंकी मुख्यतासे सन्निकर्षके जाननेकी सूचना
- जिसके आयुवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके सात कर्मोंकी वेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार

- जिसके ज्ञानावरणीय वेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायकी मुख्यतासे जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीयवेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके मोहनीय वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके नाम और गोत्रवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- इसी प्रकार नाम और गोत्रकी मुख्यतासे जाननेकी सूचना
- जिसके आयुवेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है उसके सात कर्मोंकी वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- परस्थान वेदना सन्निकर्षके कथन करनेकी सूचना
- जिसके ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके दर्शनावरण और अन्तरायकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके वेदनीय, नाम और गोत्रवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके मोहनीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण और अन्तरायकी मुख्यतासे सन्निकर्षके जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तरायकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार

- उसके नाम और गोत्रवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- वेदनीयके समान नाम और गोत्रकी मुख्यतासे सन्निकर्षके जाननेकी सूचना
- जिसके मोहनीय वेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके आयुके सिवा शेष छह कर्मोंकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके शेष सात कर्मोंकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके ज्ञानावरणीय वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके शेष सात कर्मोंकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- ज्ञानावरणके समान शेष सात कर्मोंकी मुख्यतासे क्षेत्रकी अपेक्षा सन्निकर्षके जाननेकी सूचना
- जिसके ज्ञानावरणीय वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके दर्शनावरण और अन्तरायवेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके वेदनीय, आयु, नाम और गोत्रवेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके मोहनीय वेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण और अन्तरायकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीय वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय वेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयु, नाम और गोत्र वेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- वेदनीयके समान आयु, नाम और गोत्रकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जाननेकी सूचना
- जिसके मोहनीय वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके सात कर्मोंकी वेदना कालकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार

- जिसके ज्ञानावरणीय वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके दर्शनावरण और अन्तराय वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके वेदनीय, आयु, नाम और गोत्रवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके मोहनीय वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण और अन्तरायकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जाननेकी सूचना
- जिसके वेदनीयवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयु, नाम और गोत्रवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके मोहनीय वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके सात कर्मोंकी वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके आयुवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके छह कर्मोंकी वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके नामवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके नामवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके आयुके सिवा शेष छह कर्मोंकी वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- उसके आयुवेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार
- जिसके गोत्रवेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है उसके सात कर्मोंकी वेदना भावकी अपेक्षा कैसी होती है इसका विचार

१४. वेदनापरिमाणविधान

- वेदनापरिमाणविधान कहनेकी सूचना व स्पष्टीकरण
- उसके तीन अनुयोगद्वार व स्पष्टीकरण
- प्रकृत्यर्थताकी अपेक्षा दो आवरणकर्मोंकी प्रकृतियाँ
- वेदनीयकर्मकी प्रकृतियाँ

- मोहनीयकर्मकी प्रकृतियाँ
- आयुकर्मकी प्रकृतियाँ
- नामकर्मकी प्रकृतियाँ
- गोत्रकर्मकी प्रकृतियाँ
- अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ
- समयप्रबद्धार्थताकी अपेक्षा दो आवरण
- कर्म और अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ
- वेदनीय कर्मकी प्रकृतियाँ
- मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ
- आयु कर्मकी प्रकृतियाँ
- नामकर्मकी प्रकृतियाँ
- गोत्रकर्मकी प्रकृतियाँ
- क्षेत्रप्रत्यासकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ
- इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तरायकी प्रकृतियाँ जाननेकी सूचना
- वेदनीय कर्मकी प्रकृतियाँ
- इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मकी प्रकृतियाँ जाननेकी सूचना

१५. वेदनाभागाभागविधान

- वेदनाभागाभागविधानकी सूचना व तीन अनुयोगद्वार
- अनुयोगद्वार
- प्रकृत्यर्थताकी अपेक्षा ज्ञानावरण और दर्शनावरण प्रकृतियोंका भागाभाग
- शेष छह कर्मोंका भागाभाग
- समयप्रबद्धार्थताकी अपेक्षा ज्ञानावरण और दर्शनावरण प्रकृतियोंका भागाभाग

- शेष छह कर्मोंका भागाभाग
- क्षेत्रप्रत्यासकी अपेक्षा ज्ञानावरणका भागाभाग
- इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्मके भागाभागकी सूचना
- वेदनीय कर्मका भागाभाग
- इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मका भागाभाग

१६. वेदना अल्पबहुत्व

- वेदना अल्पबहुत्वकी सूचना व तीन अनुयोगद्वार
- प्रकृत्यर्थताकी अपेक्षा आठों कर्मोंका अल्पबहुत्व
- समयप्रबद्धतार्थकी अपेक्षा आठों कर्मोंका अल्पबहुत्व
- क्षेत्रप्रत्यासकी अपेक्षा आठों कर्मोंका अल्पबहुत्व